GLOBUS Journal of Progressive Education
A Refereed Research Journal
Vol 3 / No 2 / Jul - Dec 2013 ISSN: 2231-1335

इक्कीसवीं शताब्दी की महिला कथाकारों के साहित्य में स्त्री चेतना और पारिवारिक स्वरूप

नीलम देवी*

प्रस्तावना

इक्कीसवीं सदी में समाज परिवार और व्यक्ति सभी स्तरों पर अत्यन्त तीव्रता के साथ बदलाव आया है चूंकि साहित्य और समाज परस्पर अन्योन्याश्रित हैं इसलिए बदलाव के लिए इस दौर में यह परिर्वतन साहित्य पर भी स्पष्ट झलकता है। परिवार और पति–पत्नी संबंध, हालांकि परिवार का स्वरूप अब वह नहीं रह गया जो कुछ दशकों पहले था। नारी शिक्षा के कारण स्त्री ने परंपरागत मान्यताओं को तोड़कर व्यक्तिगत स्वतंत्रता का मार्ग अपनाया जो परिवार की पारम्परिकता को तोड़ने में प्रमुख भागीदार रहा लेकिन विघटन की स्थितियों और संबधों की नष्ट होती मधुरता के कारण स्वतंत्र चेतना युक्त नारी स्वंय भी पीड़ित व मर्माहत हुई है। डॉ0 सविता मिश्र की कहानी की रात भर धूप में नायिका निधि जीवन भर अपने एकाकी परिवार की रिक्तता को बुआ के भरे पूरे परिवार की खशहाली से तौलती रहती है और मन सदैव संबंधों की ऊष्मा के लिये ललकता और तड़पता रहता है। लवलीन की कहानी प्रतीक्षा में एक ऐसी आजाद ख्याल लडकी की व्यथा कथा है जो अपनी कल्पना के अनुरूप पुरूष की प्रतीक्षा में जिन्दगी का बड़ा हिस्सा गुजार देती है लेकिन अन्ततः उसका समूचा व्यक्तित्व ही इस प्रतीक्षा में मुरझा उठता है।

संयुक्त परिवारों में तो बहुत पहले ही टूटन प्रारम्भ हो चुकी थी लेकिन अति आधुनिकता विघटन और संक्रमण के इस दौर में पति–पत्नी, बच्चों से बनी एक छोटी सी परिवार नामक संस्था भी खतरे में पड़ गई है, उसे अपने स्वतंत्र अस्तित्व और अस्मिता की तलाश है पर उसके लिये परिवार और दाम्पत्य को दांव पर लगाकर उसे तनाव घुटन और टूटन का ही सामना करना पड़ रहा है। दरअसल नारी का यह अहं शेाषित रूप उसे ही पीड़ा दे रहा है।

मूल्य संक्रमण के दौर में आस्था और विश्वास किसी भी विचार मान्यता आदर्श या मूल्य के प्रति श्रद्धायुक्त विश्वास ही आस्था हो सकती है। आस्था और जिजीवशा का गहरा संबंध है। आस्था जीने के लिये जरूरी है तो आस्था के लिये जिजीविशा। आज भी वे ही हैं जो पहले थे। पति–परमेश्वर की भावना त्याग या सतीत्व भले ही नारी की आस्था के विषय न हो पर दाम्पत्य का सुख परिवार की आवश्यकता व परस्पर सहयोग भाव अब भी उसकी आस्था के लक्ष्य हैं।

लेखिका उर्मिला शिरीष की कहानी भईया में एक टूटे हुये भाई की भाई पर आस्था ही उसे खून के रिश्तों की चरमराहट के बावजूद जीने का सम्बल प्रदान करती है। सुधा मुनीन्द्र की कहानी शेष शुभ में नायिका अपने मातृत्व के विश्वास बल पर ही तमाम रिश्तों के आतंक से खुद की चेतना को मुक्त कर जीने के लिए स्वतंत्र निर्णय ले पाती है। डॉ0 मंजु अरूण की कहानी हथियार में प्रिया की अपने सुहाग चिन्हों पर आस्था एक नये रूप में सामने आती है। वह विधवा होने के बाद बावजूद समाज की दूषित आकांक्षाओं के खिलाफ अपनी आस्था को एक अस्त्र के रूप में इस्तेमाल करती है। नये विचारों में आस्था रखने वाली नारी अपने अस्तित्व व अस्मिता के प्रति सजग है। छुआछूत जाति–पांति यहाँ तक की शारिरीक पवित्रता तक की धारणाओं को वह अब गौण मानती है। इसका अर्थ यह भी नहीं है कि वह अमर्यादित हो गई है बल्कि यह है कि अब वह अपने व्यक्तित्व को वह षरीर से ज्यादा महत्व देने लगी है। वह वैचारिक दृष्टि से सम्पन्न हो गई है।

स्वतंत्र निर्णय व स्वच्छन्द व्यक्तित्व आज की कहानियों में नारी न तो रवीन्द्र की अश्रुमयी है और न शरद की विद्राहिणी बल्कि हाड–मांस में परिपूर्ण एक आवश्यकताओं को भी खुलकर स्वीकारती है। यह स्वच्छन्दता समाज के परम्परागत स्वरूप के लिये शुभ नहीं है। सरला अग्रवाल की कहानी बनता हुआ सेतू में एक ऐसी ही नारी शेफाली का चित्रण है जो अति स्वच्छन्दतावाद से पीड़ित है, जिसके लिये दाम्पत्य की पवित्रता और मर्यादित दायरा कोई महत्व नहीं रखते। दूसरा पक्ष यह भी है कि आज की नारी अपने स्वतंत्र निर्णयों और स्वच्छन्दता में भी अधिक विवेकशील हो उठी है।

कुछ अपवादों को छोड़ दें तो वस्तुतः आज की नारी अपने व्यक्तित्व की स्वतंत्रता और व्यक्तित्व के प्रति अधिक सजग है। उसका व्यक्तित्व उन दीवारों से कहीं अधिक ऊँचा और पारदर्शी है जिन्हें परम्परावादी मूल्यों के ईंट गारे से खड़ा किया गया है।

नारी की महत्कांक्षायें विविध आयामः आज की कथाओं में चित्रित नारी परम्परागत नारी से भिन्न व यथार्थ के धरातल से जुड़ा हुआ व्यक्तित्व है। वैष्वीकरण के इस युग में नारी की महत्वकांक्षायें भी बने बनाये दीवारों से बाहर नये आकार ले रही है। इस दौर में क्षमा चतुर्वेदी, लवलीन, सविता, मिश्रा, रश्मि कुमार, विमला भंडारी, आदि लेखिकाओं ने अपनी कहानियों में नारी की महत्वकांक्षाओं को नया विस्तार दिया हैं। नारी अब चूल्हे चैके तक ही सीमित नहीं रहना चाहती वह अपने व्यक्तित्व के हर कोण का विकास करना चाहती है। वह दाम्पत्य के सुकून के धरातल से जुड़े रहकर भी अपने आकांक्षाओं के आकाश

* एसिसटेंट प्रौफेसर, टीका राम पी0 जी0 गर्ल्स कालेज, सोनीपत

Scanned with CamScanner

पर उन्मुक्त उड़ना चाहती है। वह स्वंय के बारे में स्वंय ही निर्णय लेना चाहती है और लेती भी है जहाँ उसमें अवरोध होता है तो वह विद्रोह भी करती है।

इक्कीसवीं सदी की महिला कथाकारों के साहित्य में परिवारों का स्वरूप इक्कीसवीं शताब्दी तक आते–जाते समाज में व्यापक परिर्वतन हुआ और वह परिर्वतन साहित्य में स्पष्ट रूप से परिलक्षित हुआ। नारी लेखिकाओं के लेखन और तेवर और स्वर भी बदला। भारतीय समाज व्यष्टिवादी न होकर समष्टिवादी है। अतः यहाँ परिवारों का विषेष महत्व है और परिवार की केन्द्रीय धुरी नारी ही है। इसलिये हिन्दी कथा साहित्य में पारिवारिक व इसी परिप्रेक्ष्य में नारी चित्रण बहुतायत से हुआ है लेकिन समय के साथ–साथ पारिवारिकता के साथ नारी की भूमिका में क्रमषः अन्तर आता गया है जो कि स्वभाविक भी है।

21वीं शताब्दी के कथा साहित्य में परिवार का स्वरूप वह नहीं रह गया जो स्वतंत्रता पूर्व रहा था। अतः नारी के संबंध भी परिवार के साथ पूर्व जैसे नहीं रह सके। परिवार के प्रति नारी का परम्परागत दृष्टिकोण समाप्त करने में निम्नलिखित तत्वों का योगदान मुख्य रूप से माना जा सकता है।

नारी शिक्षा का अधिक प्रसार नारी का कामकाजी होना नारी का अपनी अस्मिता व स्वतंत्रता के प्रति सजग होना सामाजिक मूल्यों व परिवेष में बदलाव नारी में आर्थिक स्वावलम्बन की भावना। वास्तव में नारी शिक्षा के कारण स्त्री ने परम्परागत मान्यताओं को तोड़कर व्यक्तिगत स्वतंत्रता का मार्ग अपनाया जो परिवार की परम्परिकता समाप्त करने में प्रमुख भागीदार रहा। इस स्थिति को आधुनिक कथा लेखकों विषेष कर लेखिकाओं जैसे मन्नू भंडारी, ऊषा प्रियंवदा, ममता कलिया, कृष्णा सोबती, मृदुला सिन्हा, रजनी पनिकर, कृष्णा अग्निहोत्री, षिवानी मृट्ला गर्ग आदि ने अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त किया है। स्वातंत्र्योत्तर कथा साहित्य में नारी से संबंधित अनेकानेक कहानियों में पारिवारिक विघटन का स्वरूप जिसमें अजनबीपन व पारिवारिक संबंधों की नष्ट होती मधुरता का स्वर प्रमुख है।

आधुनिक कथा साहित्य के नारी चरित्रों में शिक्षा और आर्थिक स्वावलम्बन के साथ–साथ नारी की अपने अस्तित्व के प्रति सजगता बढ़ी है और वह अपने अस्तित्व की कीमत पर परिवार को बचाने में विश्वास नहीं करती पर अस्मिता की यह ललक और स्वतंत्रता की चाह कई बार स्वच्छन्दता और उच्छृंखलता बनकर विकृति के रूप में सामने आ गई है।

नारी की स्थितियों मनोभावों और प्रवृत्तियों में आने वाला अन्तर संयुक्त परिवारों की टूटन तक ही सीमित नहीं रहा वरन् दाम्पत्य को विघटन के कगार पर लगाकर तनाव व कुंठा जैसी विकृतियों को जन्म देता है। हिन्दी कथा साहित्य में पारिवारिक विघटन की स्थितियों का जो चित्रण हुआ है उसका केवल स्त्री की स्वच्छन्दता ही नहीं बल्कि पुरूष की अहंवादी या सामन्तवादी प्रवृत्ति भी इसके लिये जिम्मेदार है। कृष्णा सोबती की अधिकांश कथाओं, दिलोदनिश, मित्रो, मरजानी, जिन्दगीनामा, डर से बिछुडी आदि में सामन्तवादी दृष्टिकोण की शिकार नारी का चित्रण हुआ है जिसका वजूद केवल पत्नी रखैल या परित्यक्ता के रूप में है। सामन्तवादी षोषण कृष्णा सोबती के धड़कते जीवन्त नारी पात्रों में एक चिनगारी बनकर प्रकट होता रहता है। इस चिनगारी से जलती नारी ने इन उपन्यासों में नैतिकता को विशेष महत्व न देकर अनैतिक राहों में अपनी कुंठाओं की गाठें खोली हैं जो मनोविश्लेषणात्मक रूप से भले ही यथार्थवादी है परन्तु शुभत्व की दृष्टि से परे है। कारण जो भी रहे हो पर यह स्पष्ट है कि मूल्य संक्रमण अति आधुनिक और विघटन के इस दौर में पति–पत्नी व बच्चे से बनी परिवार नामक छोटी सी संस्था भी खतरे में पड़ गई है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि हिन्दी कथा साहित्य में भारतीय परिवारों और उसके सन्दर्भ में आधुनिक नारी की परिवर्तित भूमिका के बारे में जो बदलाव आया है उसके लिये नारी की शिक्षा और चेतना ही नहीं बल्कि समाज के बदलते हुए मूल्य भी जिम्मेदार हैं। परिवार और समाज का पारम्परिक ढांचा टूट रहा है और आधुनिकीकरण का प्रभाव बढ़ रहा है जिसके कारण नारी का पारम्परिक रूप विखण्डित होकर उसका कामकाजी व स्वतंत्र अस्तित्वपूर्ण रूप सामने आ रहा है। यह भी सत्य है कि पारिवारिक ढांचे नारी व्यक्तित्व के आधार और स्वरूप परिवर्तित हो गये है पर परिवार का केन्द्र बिन्दु आज भी नारी ही है और सदैव रहेगी भी।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची:–

1. नारी चेतना और कृष्णा सोबती के उपन्यास, डॉ0 गीता सोलंकी।
2. नारी, जैनेन्द्र कुमार।
3. स्त्रीवादी साहित्य विमर्ष, जगदीष्वर चतुर्वेदी।
4. नागार्जुन बेचलनामा जवाहर पुस्तकालय, मथुरा।
5. डॉ0 विनय कुमार पाठक, स्त्री विमष, भावना प्रकाशन, दिल्ली 2005।
6. संपा राजेन्द्र यादव सपा, अतीत होती सदी और स्त्री का भविष्य, अर्चना वर्मा, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण 2001।
7. उतर आधुनिकीकता साहित्य और संस्कृति की नयी सोच– देवेन्द्र इस्सर, इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, 2002।

Scanned with CamScanner